# PAPER-III
# SANSKRIT TRADITIONAL SUBJECTS

**Signature and Name of Invigilator**

1. (Signature) ____________________________
   (Name) ____________________________
2. (Signature) ____________________________
   (Name) ____________________________

OMR Sheet No. : ..............................................
(To be filled by the Candidate)

Roll No. | | | | | | | | |

(In figures as per admission card)

Roll No.________________________________
(In words)

**J 7 3 1 4**

Time : 2 ½ hours] [Maximum Marks : **150**

Number of Pages in this Booklet : **8**

Number of Questions in this Booklet : **75**

## Instructions for the Candidates

1. Write your roll number in the space provided on the top of this page.
2. This paper consists of seventy five multiple-choice type of questions.
3. At the commencement of examination, the question booklet will be given to you. In the first 5 minutes, you are requested to open the booklet and compulsorily examine it as below :
   (i) To have access to the Question Booklet, tear off the paper seal on the edge of this cover page. Do not accept a booklet without sticker-seal and do not accept an open booklet.
   (ii) **Tally the number of pages and number of questions in the booklet with the information printed on the cover page. Faulty booklets due to pages/questions missing or duplicate or not in serial order or any other discrepancy should be got replaced immediately by a correct booklet from the invigilator within the period of 5 minutes. Afterwards, neither the Question Booklet will be replaced nor any extra time will be given.**
   (iii) After this verification is over, the OMR Sheet Number should be entered on this Test Booklet.
4. Each item has four alternative responses marked (A), (B), (C) and (D). You have to darken the circle as indicated below on the correct response against each item.
   **Example :** Ⓐ Ⓑ ● Ⓓ
   where (C) is the correct response.
5. Your responses to the items are to be indicated in the **OMR Sheet given inside the Booklet only.** If you mark at any place other than in the circle in the OMR Sheet, it will not be evaluated.
6. Read instructions given inside carefully.
7. Rough Work is to be done in the end of this booklet.
8. If you write your Name, Roll Number, Phone Number or put any mark on any part of the OMR Sheet, except for the space allotted for the relevant entries, which may disclose your identity, or use abusive language or employ any other unfair means such as change of response by scratching or using white fluid, you will render yourself liable to disqualification.
9. You have to return the test question booklet and Original OMR Sheet to the invigilators at the end of the examination compulsorily and must not carry it with you outside the Examination Hall. You are, however, allowed to carry original question booklet and duplicate copy of OMR Sheet on conclusion of examination.
10. **Use only Blue/Black Ball point pen.**
11. **Use of any calculator or log table etc., is prohibited.**
12. **There is no negative marks for incorrect answers.**

## परीक्षार्थियों के लिए निर्देश

1. इस पृष्ठ के ऊपर नियत स्थान पर अपना रोल नम्बर लिखिए ।
2. इस प्रश्न-पत्र में पचहत्तर बहुविकल्पीय प्रश्न हैं ।
3. परीक्षा प्रारम्भ होने पर, प्रश्न-पुस्तिका आपको दे दी जायेगी । पहले पाँच मिनट आपको प्रश्न-पुस्तिका खोलने तथा उसकी निम्नलिखित जाँच के लिए दिये जायेंगे, जिसकी जाँच आपको अवश्य करनी है :
   (i) प्रश्न-पुस्तिका खोलने के लिए उसके कवर पेज पर लगी कागज की सील को फाड़ लें । खुली हुई या बिना स्टीकर-सील की पुस्तिका स्वीकार न करें ।
   (ii) **कवर पृष्ठ पर छपे निर्देशानुसार प्रश्न-पुस्तिका के पृष्ठ तथा प्रश्नों की संख्या को अच्छी तरह चैक कर लें कि ये पूरे हैं । दोषपूर्ण पुस्तिका जिनमें पृष्ठ/प्रश्न कम हों या दुबारा आ गये हों या सीरियल में न हों अर्थात् किसी भी प्रकार की त्रुटिपूर्ण पुस्तिका स्वीकार न करें तथा उसी समय उसे लौटाकर उसके स्थान पर दूसरी सही प्रश्न-पुस्तिका ले लें । इसके लिए आपको पाँच मिनट दिये जायेंगे । उसके बाद न तो आपकी प्रश्न-पुस्तिका वापस ली जायेगी और न ही आपको अतिरिक्त समय दिया जायेगा ।**
   (iii) इस जाँच के बाद OMR पत्रक की क्रम संख्या इस प्रश्न-पुस्तिका पर अंकित कर दें ।
4. प्रत्येक प्रश्न के लिए चार उत्तर विकल्प (A), (B), (C) तथा (D) दिये गये हैं । आपको सही उत्तर के वृत्त को पेन से भरकर काला करना है जैसा कि नीचे दिखाया गया है ।
   **उदाहरण** : Ⓐ Ⓑ ● Ⓓ
   जबकि (C) सही उत्तर है ।
5. प्रश्नों के उत्तर **केवल प्रश्न पुस्तिका के अन्दर दिये गये OMR पत्रक पर ही** अंकित करने हैं । यदि आप OMR पत्रक पर दिये गये वृत्त के अलावा किसी अन्य स्थान पर उत्तर चिह्नांकित करते हैं, तो उसका मूल्यांकन नहीं होगा ।
6. अन्दर दिये गये निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें ।
7. कच्चा काम (Rough Work) इस पुस्तिका के अन्तिम पृष्ठ पर करें ।
8. यदि आप OMR पत्रक पर नियत स्थान के अलावा अपना नाम, रोल नम्बर, फोन नम्बर या कोई भी ऐसा चिह्न जिससे आपकी पहचान हो सके, अंकित करते हैं अथवा अभद्र भाषा का प्रयोग करते हैं, या कोई अन्य अनुचित साधन का प्रयोग करते हैं, जैसे कि अंकित किये गये उत्तर को मिटाना या सफेद स्याही से बदलना तो परीक्षा के लिये अयोग्य घोषित किये जा सकते हैं ।
9. आपको परीक्षा समाप्त होने पर प्रश्न-पुस्तिका एवं मूल OMR पत्रक निरीक्षक महोदय को लौटाना आवश्यक है और परीक्षा समाप्ति के बाद उसे अपने साथ परीक्षा भवन से बाहर न लेकर जायें । हालांकि आप परीक्षा समाप्ति पर मूल प्रश्न-पुस्तिका तथा OMR पत्रक की डुप्लीकेट प्रति अपने साथ ले जा सकते हैं ।
10. **केवल नीले/काले बाल प्वाईंट पेन का ही इस्तेमाल करें ।**
11. **किसी भी प्रकार का संगणक (कैलकुलेटर) या लाग टेबल आदि का प्रयोग वर्जित है ।**
12. **गलत उत्तरों के लिए कोई नकारात्मक अंक नहीं हैं ।**

# संस्कृत-परम्परागत विषय:
# संस्कृत परम्परागत विषय
# SANSKRIT TRADITIONAL SUBJECTS
## प्रश्नपत्रम् – III
## प्रश्नपत्र – III
## Paper – III

**संङ्केत :** अस्मिन् प्रश्नपत्रे **पञ्चसप्तति:** **(75)** बहुविकल्पीय प्रश्ना: सन्ति । तेषु प्रतिप्रश्नमङ्कद्वयम् । **सर्वे** प्रश्ना उत्तरणीया: ।

**टिप्पणी :** इस प्रश्नपत्र में **पचहत्तर** (75) बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं । प्रत्येक प्रश्न के **दो (2)** अंक हैं । **सभी** प्रश्नों के उत्तर दें ।

**Note :** This paper contains **seventy-five (75)** multiple choice questions. Each question carries **two (2)** marks. Attempt **all** the questions.

**1.** स्थिरसंज्ञकवारोऽस्ति –
स्थिरसंज्ञक वार है –
स्थिरसंज्ञक वार is –
(A) शनिवार: (B) सोमवार:
(C) शुक्रवार: (D) रविवार:

**2.** जन्मत: एकादशघस्रे भवति –
जन्म से ग्यारहवें दिन होता है –
On the eleventh day from the birth, there takes place –
(A) नामकरणम् (B) उपनयनम्
(C) चूडाकरणम् (D) कर्णवेध:

**3.** अर्कवासरे हस्त नक्षत्रं स्यात्तर्हि भवति –
रविवार को हस्त नक्षत्र हो, तो होता है –
When हस्त नक्षत्र on रविवार, there happens –
(A) रवियोग: (B) सर्वार्थसिद्धियोग:
(C) सिद्धियोग: (D) राजयोग:

**4.** पापसंदृष्ट: चन्द्रोऽष्टमे भवति –
पाप दृष्ट चन्द्र अष्टम में होता है –
When पाप दृष्ट चन्द्र is in अष्टमस्थान, it causes –
(A) मरणाय (B) रक्षणाय
(C) कष्टाय (D) महद्दु:खाय

**5.** यो ग्रहो वर्गोत्तम: स्यात् तदायुदायो भवति –
जो ग्रह वर्गोत्तम हो उसका आयुदाय होता है –
The ग्रह being वर्गोत्तम, results आयुदाय –
(A) तदैव (B) द्विगुणम्
(C) चतुर्गुणम् (D) दशघ्नम्

**6.** भानोरुदयादुदयं भवति –
सूर्य के उदय से उदय तक होता है –
From Sunrise to next Sunrise, there becomes –
(A) चान्द्रदिनम् (B) सावनदिनम्
(C) सौरदिनम् (D) नाक्षत्रदिनम्

**7.** सूर्यतनयादधोऽध: पंचमहोरेशो भवति –
शनि के नीचे-नीचे पाँचवा होरेश होता है –
Below the below of शनि, the fifth होरेश is –
(A) गुरु: (B) सूर्य:
(C) शुक्र: (D) बुध:

**8.** चन्द्रग्रहणं भवति –
चन्द्रग्रहण होता है –
चन्द्रग्रहण happens –
(A) पूर्णिमादौ (B) प्रतिपदादौ
(C) अमान्ते (D) अमादौ

9. चान्द्रक्षयदिनानामन्तरम्भवति –
चान्द्र-क्षय दिनों का अन्तर होता है –
The difference between the days of चान्द्रक्षय is called –
(A) सावनदिनानि (B) चान्द्रदिनानि
(C) नाक्षत्रदिनानि (D) सौरदिनानि

10. मध्यमस्पष्टभुजयोरन्तरम्भवति –
मध्यम-स्पष्ट भुजों का अन्तर होता है –
The difference between two मध्यम-स्पष्ट भुजs –
(A) मध्यमान्तरम् (B) भुजान्तरम्
(C) स्पष्टान्तरम् (D) देशान्तरम्

11. "मासं कल्याणी" इत्यत्र द्वितीयाविधायक सूत्रम् –
"मासं कल्याणी" यहाँ द्वितीया विधायक सूत्र है –
"मासं कल्याणी" – here the सूत्र enjoining द्वितीया, is
(A) कालाध्वनोरत्यन्त संयोगे
(B) कर्मणि द्वितीया
(C) तृतीयार्थे कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया
(D) अतो नुम्

12. "विद्गोरादिभ्यश्च" इति सूत्रस्य उदाहरणम् –
"विद्गोरादिभ्यश्च" इस सूत्र का उदाहरण है –
"विद्गोरादिभ्यश्च" the illustration of this sutra, is –
(A) नर्तकी (B) कामुकी
(C) मुक्तकेशी (D) सुरापानी

13. क्रोष्टुरित्यत्र उकारादेशो भवति –
क्रोष्टु इसमें उकार आदेश होता है –
उकार in क्रोष्टु is substituted by –
(A) ऋत उत् (B) विसर्जनीयस्य स:
(C) ससजुषोरु: (D) प्रादय:

14. फलमात्रं धात्वर्थ:, व्यापार: प्रत्ययार्थ इतिमतम् –
फलमात्रं धात्वर्थ है, व्यापार प्रत्ययार्थ है, यह मत है –
धात्वर्थ is फलमात्र and प्रत्ययार्थ is व्यापार this opinion is –
(A) नागेशभट्टस्य (B) बालमभट्टस्य
(C) मण्डनमिश्रस्य (D) भट्टोजीदीक्षितस्य

15. प्रत्ययार्थव्यापारव्यधिकरफलवाचकत्वम् –
प्रत्यय का अर्थ, व्यापार व्यधिकरण फलवाचकत्व है –
The meaning of प्रत्यय is फलबोधकता apart from व्यापार –
(A) सकर्मकत्वम् (B) अकर्मकत्वम्
(C) अव्ययत्वम् (D) व्यापारत्वम्

16. "अर्थरूपं तथा शब्दे स्वरूपं च प्रकाशते" इति –
"अर्थरूपं तथा शब्दे स्वरूपं च प्रकाशते" यह है –
"अर्थरूपं तथा शब्दे स्वरूपं च प्रकाशते" is –
(A) वाक्यपदीये (B) काशिकायाम्
(C) लघुमंजूषायाम् (D) महाभाष्ये

17. "वेदेन प्रयोजनमुदिश्य विधीयमानोऽर्थ: धर्म:" इति धर्म लक्षणमस्ति –
"वेदेन प्रयोजनमुदिश्य विधीयमानोऽर्थ: धर्म:" यह धर्म लक्षण है –
"वेदेन प्रयोजनमुदिश्य विधीयमानोऽर्थ: धर्म:" this definition of धर्म is –
(A) जैमिनिन्यायभाष्ये
(B) मीमांसान्यायप्रकाशे
(C) अर्थसंग्रहे
(D) कणादमते

18. वेदा: प्रमाणमिति न स्वीकुर्वन्ति –
वेद को प्रमाण नहीं मानते हैं –
The validity of Vedas is not accepted by –
(A) जैना: (B) पूर्वमीमांसका:
(C) वेदान्तिन: (D) योगिन:

19. आश्रमाणां योनिरस्ति –
आश्रमों की योनि है –
The योनि of आश्रमs, is –
(A) संन्यास: (B) वानप्रस्थ:
(C) गृहस्थ: (D) ब्रह्मचर्य:

20. मरणाशौचे विप्रस्याशौचं भवति –
मरणाशौच में विप्र का अशौच होता है –
The period of अशौच for Brahmin during मरणाशौच, is –
(A) एकादशाहम् (B) द्वादशाहम्
(C) पञ्चदशाहम् (D) दशाहम्

21. धर्मसूत्रस्य प्रवर्त्तकोऽस्ति –
धर्मसूत्र का प्रवर्त्तक है –
The propounder of धर्मसूत्रs, is –
(A) आवस्तम्ब: (B) बौधायन:
(C) गौतम: (D) मानव:

22. प्रवृत्तस्य प्रवर्त्तको भवति –
प्रवृत्त का प्रवर्त्तक होता है –
The प्रवर्त्तक of प्रवृत्त, is
(A) अनुमन्ता (B) आज्ञापयिता
(C) उपदेष्टा (D) स्वार्थान्ध:

23. वृद्धिश्राद्धमस्ति –
वृद्धिश्राद्ध है –
वृद्धिश्राद्ध is –
(A) नित्यम् (B) काम्यम्
(C) नैमित्तिकम् (D) साम्वत्सरिकम्

24. दायभागग्रन्थस्य कर्त्ताऽस्ति –
दायभाग ग्रन्थ का कर्त्ता है –
The author of the text दायभाग, is –
(A) विज्ञानेश्वर: (B) जीमूतवाहन:
(C) मित्रमिश्र: (D) नीलकण्ठ:

25. कल्पादौ प्रवचननिमित्ता श्रुति: सम्भवतीति वेदानाम् –
कल्पादि में प्रवचन निमित्त श्रुति सम्भव होती है, यह वेदों का
प्रवचननिमित्त श्रुति during कल्पादि that appears, is –
(A) पौरुषेयत्वम् (B) अपौरुषेयत्वम्
(C) प्रामाण्यम् (D) अप्रामाण्यम्

26. प्रधानेन स्वर्गादिजननीये अवान्तरव्यापारो भवति –
प्रधान रूप से स्वर्गादि उत्पत्ति में अवान्तर व्यापार होता है –
Prominently, अवान्तर व्यापार taking place during स्वर्गादि उत्पत्ति, is –
(A) यागध्वंस: (B) यागज्ञानम्
(C) अपूर्वम् (D) पुरोडाश:

27. गोविन्दापर्ण बुद्धया क्रियमाणो मोक्ष हेतु: –
गोविन्दापर्ण विधि से किया जाने वाला मोक्ष हेतु है –
The मोक्ष हेतु being excerised through गोविन्दापर्ण विधि, is –
(A) अध्ययनम् (B) याग:
(C) प्रायश्चितम् (D) उपवास:

28. द्रव्यत्वम् अवच्छेदकं भवति –
द्रव्यत्व अवछेदक होता है –
द्रव्यत्व is अवच्छेदक –
(A) निमित्तकारणत्वस्य
(B) समवायिकारणत्वस्य
(C) असाधारणकारणत्वस्य
(D) असमवायिकारणत्वस्य

29. कारणात्मना कार्यमस्तीति –
कारणात्मा से कार्य है –
"By कारण, the उत्पत्ति of कार्य takes place" is the opinion of –
(A) जैना: (B) बौद्धा:
(C) सांख्या: (D) नैयायिका:

30. साध्याभाववत्पक्ष इति बाध ज्ञानं प्रतिबन्धकं भवति –
साध्याभाववत्पक्ष यह बाध ज्ञान प्रतिबन्धक होता है –
The बाधज्ञान in साध्याभाववत्पक्ष is प्रतिबन्धक –
(A) परामर्शस्य (B) व्याप्तिज्ञानस्य
(C) अनुमिते: (D) आहार्यस्य

31. द्रव्यादिसप्तान्यतमत्वं भवति –
द्रव्यादि सप्तान्यतमत्व होता है –
द्रव्यादि सप्तान्यतमत्व is –
(A) द्रव्यादिभेदसप्तकभावत्त्वम्
(B) द्रव्यादिसप्तभिन्नभिन्नत्वम्
(C) द्रव्यादिसप्तकत्वाभावत्वम्
(D) द्रव्यादिसप्तभिन्नत्वाभावत्वम्

32. सदागतिमत्त्वाभावात् तमो न भवति –
सदा गतिमत्व अभाव से तम नहीं होता है –
It is not तम:, as there is an absence of the quality of सदा गति –
(A) वायु: (B) मन:
(C) आकाश: (D) जलम्

33. तज्ज्ञानविषयकज्ञानेन तज्ज्ञानस्य गृह्यते –
उस ज्ञान विषयक ज्ञान का ग्रहण होता है –
By तज्ज्ञानविषयक ज्ञान, तज्ज्ञान accepts –
(A) प्रामाव्यम् (B) अप्रामाण्यम्
(C) बुद्धित्वम् (D) संशयत्वम्

34. संसरति बद्धयते मुच्यते च –
संसरण बन्धन और मोक्ष होता है –
There happens संसरण, बन्धन and मोक्ष to –
(A) बुद्धि: (B) प्रकृति:
(C) पुरुष: (D) धर्म:

**35.** संयमसिद्धिः प्रतिपादयति –
संयमसिद्धि प्रतिपादित करता है –
संयमसिद्धि establishes –
(A) परिणामत्रय संयमात् अतीतानागतज्ञानम्
(B) प्रत्ययस्य परचित्तज्ञानम्
(C) त्रयमेकत्र संयमः
(D) त्रयमन्तरङ्गपूर्वेभ्यः

**36.** "त्रीणि प्रमाणानि" इति –
तीन प्रमाण है यह –
There are three प्रमाणs – this opinion is –
(A) सांख्ययोगिनः (B) प्राभाकराः
(C) आलंकारिकाः (D) वैशेषिकाः

**37.** राजसपुराणं भवति –
राजस पुराण है –
The राजस Purana is –
(A) भविष्यपुराणम् (B) मत्स्यपुराणम्
(C) नारदीयपुराणम् (D) वराहपुराणम्

**38.** पूजने श्रेष्ठमुद्राः भवन्ति –
पूजन में श्रेष्ठ मुद्रायें होती हैं –
The number best मुद्रs during पूजन, is –
(A) पञ्चाशत् (B) नव
(C) षोडश (D) पञ्चपञ्चाशत्

**39.** सूर्यस्य रथः _______ परिमितो भवति –
सूर्य का रथ _______ परिमित होता है –
The limit of सूर्यरथ is –
(A) पञ्चयोजन (B) नवसहस्रयोजन
(C) सप्तयोजन (D) एकयोजन

**40.** "सर्गश्च प्रतिसर्गश्च" इत्यत्र प्रतिसर्गस्यार्थो भवति –
"सर्गश्च प्रतिसर्गश्च" यहाँ पर प्रतिसर्ग का अर्थ होता है –
"सर्गश्च प्रतिसर्गश्च" here the meaning of प्रतिसर्ग is –
(A) उत्पत्तिः (B) स्थितिः
(C) प्रलयः (D) देवभूमिः

**41.** राजगामिपैशुनं ______ भवति
राजगामिपैशुनं ______ होता है
The राजगामिपैशुनं is –
(A) ब्रह्महत्यासमम् (B) गोवधसमम्
(C) मिथ्यासमम् (D) सत्यम्

**42.** ब्रत्रये नान्तर्भवति –
तीन "ब्र" के अन्तर्गत नहीं है –
It is not included in ब्रत्रय –
(A) ब्रह्माण्डपुराणम् (B) ब्राह्मपुराणम्
(C) ब्रह्मवैवर्त्तपुराणम् (D) वामनपुराणम्

**43.** स्वरितस्य भेदाः भवन्ति –
स्वरित के भेद होते हैं –
The divisions of स्वरित are –
(A) त्रयः (B) पञ्च
(C) अष्टौ (D) सप्त

**44.** सामवेदीयं श्रोतसूत्रं वर्तते –
सामवेदीय श्रोतसूत्र है –
The श्रौतसूत्र belonging to सामवेद, is –
(A) कात्यायनश्रौतसूत्रम्
(B) वाधूलश्रौतसूत्रम्
(C) लाट्यायनश्रौतसूत्रम्
(D) मानवश्रौतसूत्रम्

**45.** वेददीप भाष्यस्य कर्त्ताऽस्ति –
वेददीप भाष्य के कर्त्ता हैं –
The author of the commentary called वेददीप, is –
(A) सायणाचार्यः (B) सलायुधः
(C) कर्काचार्य (D) महीधरः

**46.** संस्कारगणपतेः कर्त्ताऽस्ति –
संस्कारगणपति के कर्त्ता है –
The author of संस्कारगणपति, is –
(A) जयरामः (B) हरिहरः
(C) वासुदेवदीक्षितः (D) रामकृष्णभट्टः

**47.** आश्वलायनगृहसूत्रे संस्काराः सन्ति –
आश्वलायन गृहसूत्र में संस्कार हैं –
The number of संस्कारs in आश्वलायनगृह्यसूत्र, is –
(A) षोडश (B) द्वादश
(C) एकादश (D) पञ्चविंशति

**48.** निरुक्तं भवति –
निरुक्त होता है –
Nirukta is –
(A) दशविधम् (B) त्रिविधम्
(C) नवविधम् (D) पञ्चविधम्

**49.** द्युस्थानीया देवता विद्यते –
द्युस्थानीय देवता हैं –
द्युस्थानीय देवता is –
(A) वरुणः (B) अग्निः
(C) सूर्यः (D) विद्युत्

50. शब्दार्थो सहितौ वक्रकवि व्यापार शालिनि ।
बन्धे व्यवस्थितो काव्यं तद्विदाहलाद कारिणि ।।
इति काव्यलक्षणमस्ति –
यह काव्य लक्षण है
this definition of Kāvya, is
(A) आनन्दवर्द्धनस्य (B) भामहस्य
(C) मम्मटस्य (D) कुन्तकस्य

51. "अरोपिताक्रिया" इति लक्षणमस्ति –
"अरोपिताक्रिया" यह लक्षण है –
"अरोपिताक्रिया" this definition is –
(A) अभिधाया: (B) लक्षणाया:
(C) व्यञ्जनाया: (D) तात्पर्याख्याया:

52. "निर्वेद: स्थायिभावोऽस्ति शान्तोऽपि नवमो रस:" इति उक्ति: वर्तते –
"निर्वेद: स्थायिभावोऽस्ति शान्तोऽपि नवमो रस:" – यह उक्ति है –
"निर्वेद: स्थायिभावोऽस्ति शान्तोऽपि नवमो रस:" – this statement is –
(A) भरतस्य (B) भामहस्य
(C) आनन्दवर्द्धनस्य (D) मम्मटस्य

53. "काव्यबन्धोऽभिजातानां हृदयाहलादकारक:" – इति काव्य प्रयोजनमस्ति
"काव्यबन्धोऽभिजातानां हृदयाहलादकारक:" – यह काव्य-प्रयोजन है
"काव्यबन्धोऽभिजातानां हृदयाहलादकारक:" – this काव्यप्रयोजन is
(A) भामहस्य (B) मम्मटस्य
(C) कुन्तकस्य (D) विश्वनाथस्य

54. पण्डितराज जगन्नाथोक्तदिशा काव्या भेदा: भवन्ति –
पण्डितराज जगन्नाथ के अनुसार काव्य के भेद होते हैं –
The divisions of काव्य according पण्डितराज जगन्नाथ, are –
(A) त्रय: (B) चत्वार:
(C) पञ्च (D) सप्त

55. क्षेमेन्द्रेण औचित्य विचारचर्चायामौचित्यस्य भेदा: निरूपिता: –
क्षेमेन्द्र ने औचित्यविचार चर्चा में औचित्य के भेदों का निरूपण किया है –
The number of divisions of औचित्य explained in औचित्य विचारचर्चा of क्षेमेन्द्र, is –
(A) एकविंशति: (B) त्रयोविंशति:
(C) पञ्चविंशति: (D) सप्तविंशति:

56. वैदिकदर्शनमस्ति –
वैदिक दर्शन है –
Vaidika Darshana is –
(A) न्याय (B) जैन
(C) चार्वाक (D) बौद्ध

57. सेश्वरदर्शनमस्ति –
सेश्वरदर्शन है –
सेश्वरदर्शन is –
(A) योग (B) जैन
(C) चार्वाक (D) बौद्ध

58. हीगेल् पाश्चात्यपण्डितस्य वादोऽस्ति –
हीगेल् पाश्चात्य पण्डित का वाद है –
The वाद advocated by Hegel, the western Philosopher, is –
(A) भौतिकवाद: (B) प्रत्ययवाद:
(C) मानवतावाद (D) संशयवाद:

59. चार्वाक – संशयवादयो: साम्यमस्ति –
चार्वाक – संशयवादों में साम्य है –
The Similarity between चार्वाक and संशयवाद lies –
(A) अतीतविषयनिषेधे
(B) अनागतविषयनिषेधे
(C) अतीतानागतविषयनिषेधे
(D) अनुमानप्रामाण्ये

60. हीनयान महायानयो: वैषम्यमस्ति –
हीनयान-महायान में वैषम्य है –
The dissimilarity between हीनयान and महायान, lies –
(A) भगवद्विषये (B) जीवश्वरूपविषये
(C) जगद्विषये (D) मौक्षविषये

61. प्रमाणप्रमेयादिव्यवहारस्यापारमार्थिकत्वं स्वीकुर्वन्ति –
प्रमाणप्रमेयादिव्यवहारस्यापारमार्थिक स्वीकार करते हैं –
प्रमाणप्रमेयादिव्यवहारस्यापारमार्थिक is accepted by –
(A) शून्यवादिन: (B) क्षणभङ्गवादिन:
(C) विज्ञानवादिन: (D) अद्वैतिन:

62. बौद्धदर्शने आयतनानि सन्ति –
बौद्धदर्शन में आयतन हैं –
The आयतनs in बौद्धदर्शन are –
(A) 12 (B) 13
(C) 15 (D) 18

63. "सर्वनयात्मकं सम्यगर्थनिर्णय"लक्षणं भवति –
"सर्वनयात्मकं सम्यगर्थनिर्णय"लक्षण होता है –
"सर्वनयात्मकं सम्यगर्थनिर्णय" is the definition of –
(A) प्रमाणम् (B) प्रमेयम्
(C) प्रमिति: (D) प्रमाता

64. पञ्चविधो भेदप्रपञ्च अनादिरेव –
पञ्च प्रकार भेद प्रपञ्च अनादि ही है –
Five-fold difference of प्रपञ्च is अनादि –
(A) विशिष्टाद्वैतिन: (B) शुद्धाद्वैतिन:
(C) द्वैतिन: (D) अद्वैतिन:

65. "भक्त्या भगवदाराधनमेव परमो धर्म:" इत्यस्ति –
"भक्ति से भगवान की अराधना ही परम धर्म है" यह है –
"भगवदाराधन through भक्ति is परमधर्म" – stated –
(A) गीताभाष्ये (B) गीतातात्पर्ये
(C) महाभारते (D) रामायणे

66. देहाद्विशेषेण मोचनं नाम मुक्तिरिति वचनम् –
"देह से विशेष रूप से मुक्त होने का नाम मुक्ति" यह वचन है –
"मुक्ति means देहाद्विशेषेण मोचनम्" is the statement
(A) जयतीर्थस्य (B) राघवेन्द्रयते:
(C) आनन्दतीर्थस्य (D) वादिराजयते

67. अविद्या पदार्थो भवति –
अविद्या पदार्थ होता है –
अविद्या पदार्थ is –
(A) विद्याया अभाव: (B) विद्याप्रागभाव:
(C) विद्याविरोधी (D) विद्याभेद:

68. विवर्त विचार: वर्तते –
विवर्त का विचार है –
विवर्त is discussed –
(A) प्रशस्तपादभाष्ये (B) तत्त्वकौमूद्याम्
(C) शाङ्करभाष्ये (D) अर्थसंग्रहे

69. उपदेशसाहस्री ग्रन्थकारोऽस्ति –
उपदेशसाहस्री ग्रन्थकार है –
The author of उपदेशसाहस्री, is –
(A) मध्वाचार्य: (B) रामानुजाचार्य:
(C) गिरिधराचार्य: (D) शङ्कराचार्य:

70. उपाधि सम्बन्धात्कल्पितमात्मनि –
उपाधि सम्बन्ध से कल्पित आत्मा में है –
Due to the relation of उपाधि superimposed in आत्म, is –
(A) सुखित्वम् (B) जीवत्वम्
(C) मिथ्यात्वम् (D) जगद्योनित्वम्

71. सुषुत्प्युत्क्रान्त्यधिकरणमस्ति –
सुषुप्ति - उत्क्रान्ति अधिकरण है –
The elucidation of सुषुप्ति and प्राणोत्क्रमण is found –
(A) जैमिनीसूत्रग्रन्थे (B) ब्रह्मसूत्रग्रन्थे
(C) भक्तिसूत्रग्रन्थे (D) धर्मसूत्रग्रन्थे

72. जगत्सर्वमिदं प्रसूयेत परा सा भवति –
जिससे सारा जगत् उत्पन्न होता है वह परा होती है –
That which causes the entire universe is –
(A) शक्ति: (B) चिति:
(C) माया (D) ऊव्यक्ता

73. शाक्तेयी सर्वसिद्धिदा भवति –
शाक्तेयी सर्वसिद्धि दात्री होती है –
शाक्तेयी the bestower of सर्वसिद्धि is –
(A) क्षोभिणीमुद्रा (B) द्राविणीमुद्रा
(C) शंखमुद्रा (D) योनिमुद्रा

74. स खलु व्यसृजत –
उसने ही निर्माण किया है –
He indeed creates –
(A) सकलं प्रपञ्चम् (B) सर्वजीवजालम्
(C) चतुर्दशभुवनम् (D) पातालादिभुवनम्

75. नद्यां शिवालये तीर्थे सूर्यादि सन्निधौ जपो भवति –
नदी शिवालय तीर्थ सूर्यादि के निकट जप होता है –
जप performed in the bank of river, in Shiva temple and in tirtha, in the presence of Sun etc. becomes –
(A) निष्फल: (B) सहस्रफलद:
(C) सर्मफलद: (D) अनिष्टफलद:

**Space For Rough Work**